9

# शिवराजविजय-बटु संवाद

कवि की भावयित्री प्रतिभा से समुद्भूत कर्म काव्य होता है। काव्य दो प्रकार के होते है- ध्वनिकाव्य और गुणीभूतव्यंग्य काव्य। उनमें पुनः दो भेद किये गये है। दृश्य एवं श्रव्य काव्य। उसमें श्रव्य काव्य पुनः गद्य और पद्य भेद से दो प्रकार को होता है। संस्कृत साहित्य में छन्दोमय पद्यों के बाद में ही गद्यकाव्य का अभ्युदय हुआ। गद्य का प्रथम दर्शन कृष्ण यजुर्वेद की तैत्तिरीय संहिता में हुआ ऐसा बलदेवोपाध्याय महोदय का आशय है। गद्यकाव्य ही कवि प्रतिमा का परीक्षण स्थल होता है। जैसे सुवर्ण का परीक्षण स्थल निकष होता है। निकष पर रगड़ा हुआ सुवर्ण की रेखा ही सुवर्ण के वैशिष्टय को सूचित करता है। इसी प्रकार गद्य की एक पंक्ति ही कवि की रससिद्धता, वचनवक्रता और चिन्तन पद्धति, को चारुता से सूचित करती है। अतः प्रसिद्ध उक्ति कही गयी है- ''गद्य कवीनां निकषं वदन्ति'' पद्यकाव्य में तो शुरू में ही छन्द दृष्टिपात होता है। परन्तु गद्यकाव्य प्रथम दृष्टिपात पद सन्निवेश में होता है।

बाणभट्ट से प्रारम्भ होकर गद्य काव्य संरचना की परम्परा में विद्यमान कवियों मे अम्बिकादत्त व्यास अद्वितीय और प्रसिद्ध हैं। जयपुर निवासी ये कवि पुराणों के कर्ता व्यास के द्वितीय अवतार माने जाते हैं। इनके द्वारा बहुत से संस्कृत व हिन्दी भाषा के ग्रन्थ रचे गये। उनमें से शिवराजविजय ऐतिहासिक गद्यकाव्य शिवराजविजय का महान स्थान है। यह काव्य महाराष्ट्र के राजा शिवराज को आधार करके लिखा गया। ऐतिहासिक वृतान्त के समिश्रण से इस काव्य को 'आख्यायिका' कह सकते हैं।

अधर्म के मूलविग्रह यवन जब हमारे ऊपर शासन करते थे तब दक्षिण देश में सनातन धर्म के रक्षण में नियुक्त एक वीर थे। वे ही शिवराज है। शिवराज की माता जीजाबाई और पिता शाहजी भोसले थे। इस सनातन परम्परा के संरक्षक शिवराज की विजय यात्रा पर आश्रित इस काव्य का विकास हुआ।

टिप्पणी

इसके प्रथमविराम के प्रथमनि:श्वास के प्रथमत कुछ परिच्छेद अध्ययन के लिए चुने है। इस पाठ में सूर्योदय, गौरवटु श्यामवटु के स्वरुप, वार्तालाप, योगिराज का समाधि से उठना, इत्यादि विषय क्रमश वर्णित हैं।

## उद्देश्य

इस पाठ को पढ़कर आप सक्षम होंगे

- हिन्दू परम्परा में भगवान सूर्य की महिमा को समझ पाने में;
- गौरवटु के स्वरूप को जान पाने में;
- श्यामवटु के स्वरूप को जान पाने में;
- उनके वार्तालाप प्रसंग समझ पाने में;
- योगीराज प्रसंग को समझ पाने में;
- पाठ्यांश के अन्वयार्थ संगम को जाने पाने में और;
- पाठ्यांश के पदों के व्याकरण विमर्श और पर्याय शब्दों को जान पाने में।

## मूलपाठ 9.1

**''विष्णोर्माया भगवती यया सम्मोहितं जगत्।''( भागवतम् 10। 1। 24 )**
**''हिंस्रः स्वपापेन विहिंसितः खलः**
**साधु समत्वेन भयाद् विमुच्यते।''( भागवतम्, 10। 7। 31 )**

''अरुण एष प्रकाशः पूर्वस्यां भगवतो मरीचिमालिनः। एष भगवान् मणिराकाशमण्डलस्य, चक्रवर्ती खेचरचक्रस्य, कुमण्डलमाखण्डलदिशः, दीपको ब्रह्माण्डभाण्डस्य, प्रेयान् पुण्डरीकपटलस्य, शोकविमोकः, कोकलोकस्य, अवलम्बो रोलम्बकदम्बस्य, सूत्रधरः सर्वव्यवहारस्य, इनश्च दिनस्य। अयमेव अहोरात्रं जनयति, अयमेव वत्सरं द्वादशसु भागेषु विभनक्ति, अयमेव कारणं षण्णामृतूनाम्, एष एवाडीगकरोति उत्तरं दक्षिणं चायनम्, एनेनैव सम्पादिता युगभेदाः, एनेनैव कृताः कल्पभेदाः, एनमेवाश्रित्य भवति परमेष्ठिनः परार्धसङ्ख्या, असावेव चर्कर्ति बर्भर्ति जर्हर्ति च जगत्, वेदा एतस्यैव वन्दिनः, गायत्री अमुमेव गयति, ब्रह्मनिष्ठा ब्राह्मणा अमुमेवाहरहरुपतिहन्ते। धन्य एष कुलमूलं श्रीरामचन्द्रस्य, प्रणम्य एष विश्वेषामि'' ति उदेष्यन्तं भास्वन्तं प्रणमन् निजपर्णकुटिरात् निश्चक्राम कश्चित् गुरुसेवनपटुर्विप्रवटुः।

''अहो चिररात्राय प्रसुप्तोखहम्, स्वप्नजालपरतन्त्रेणैव महान् पुण्यमयः समयोखतिवाहितः, सन्ध्योपासनसमयोऽयमस्मरुचरणानाम्, तत् सपदि अवचिनोमि कुसुमानि।'' इति चिन्तयन् कदलीदलमेकमाकुञ्च्य, तृणशकलैः सन्धाय, पुटकं विधाय, पुष्पावचयं कर्तुमारेभे।

वटुरसौ आकृत्या सुन्दरः, वर्णेन गौरः, जटाभिर्ब्रह्मचारी, वयसा षोडशवर्षदेशीयः, कम्बुकण्ठः, आयतललाटः, सुबाहुर्विशाललोचनश्चासीत्।

कदलीदलकुञ्चायितस्य एतत्कुटीरस्य समन्तात् पुष्पवाटिका, पूर्वतः परम-पवित्र-पानीयं परस्सहस्त्र-पुण्डरीक-पटल-परिलसितं पतत्रिकुल-कूजितपूजितं पयःपूरितं सर आसीत्। दक्षिणतश्चैको निर्झर-झर्झर-ध्वनित-दिगन्तरः, फल-पटलाऽऽस्वाद-चपलित-चञ्चु- पतङ्गकुलाऽऽ-क्रमणाधिक-विनत-शाख-शाखि-समूह-व्याप्तः सुन्दरकन्दरः पर्वतखण्ड आसीत्।

यावदेष ब्रह्मचारी वटुरलिपुअमुद्धूय कुसुमकोरकानवचिनोति, तावत् तस्यैव सतीर्थ्योऽपरस्तत्समानवयाः कस्तूरिका-रेणुरूषित इव श्यामः चन्दनचर्चित-भालः कर्पूरागुरु-क्षोदच्छुरित-वक्षो-बाहु-दण्डः, सुगन्धपटलै-रुन्निद्रयन्निसव निद्रामन्थराणि कोरकनिकुरम्बकान्तरालसुप्तानि मिलिन्दवृन्दानि झटिति समुपसृत्य निवारयन् गौरवटुमेवमवादीत्-

'अलं भो अलम्! मयैव पूर्वमवचितानि कुसुमानि, त्वं तु चिरं रात्रावजागरीरिति क्षिप्रं नोत्थपितः, गुरुचरणा अत्र तडागतटे सन्ध्यामुपासन्ते, संस्थापिता मया निखिला सामग्री तेषां समीपे। यां च सप्तवर्षकल्पाम्, यवनत्रासेन निःशब्दं रुदतीम्, परमसुन्दरीम, कलितमानवदेहामिव सरस्वतीं सान्त्वयन्, मरन्दमधुरा अपः पाययन्, कन्दखण्डानि भोजयन्, त्वं त्रियामाया यामत्रमनैषीः, सेयमधुना स्वपिति, उदुद्धय च पुनस्तथैव रेदिष्यति, तत्परिमार्गणीयान्येतस्याः पितारौ गृहं च-'

इति संश्रुत्य उष्णं निःश्वस्य यावत् सोपि किञ्चिद् वक्तुमियेष तावदकस्मात् पर्वतशिखरे निपपात तयोर्दृष्टिः।

तस्मिन् पर्वते आसीदेको महान् कन्दरः। तस्मिन्नेव महामुनिरेकः समाधै तिष्ठति स्म। कदा स समाधिमङ्गीकृतवानिति कोऽपि न वेत्ति। ग्रामणी-ग्रामीण-ग्रामाः समागत्य मध्ये मध्ये तं पूजयन्ति, प्रणमन्ति स्तुवन्ति च। तं केचित् इति, अपरे लोमश इति, इतरे जैगीषव्य इति अन्ये च मार्कण्डेय इति, विश्वसन्ति स्म। स एवायमधुना शिखरादवतरन् ब्रह्मचारिवटुभ्यामदर्शि।

'अहो! प्रबुद्धो मुनिः! प्रबुद्धो मुनिः! इत एवागच्छति, इत एवागच्छति, सत्कार्योऽयं सत्कार्योऽयम्' इति तौ सम्भ्रन्तौ बभूवतुः।

अथ समापितसन्ध्यावन्दनादिक्रिये समायाते गुरौ, तदाज्ञया नित्यनियमसम्पादनाय प्रयाते गौरवटौ, छात्रगणसहकारेण प्रस्तुतासु च स्वागतसामग्रीषु, 'इत आगम्यताम्, सनाथ्यताभेष आश्रमः' इति सप्रणाममभिगभ्य वदत्सु निखिलेषु, योगिराज आगत्य तन्निर्दिष्टकाहपीठं भास्वानिवोदयगिरिमारुरोह, उपाविशच्च।

तस्मिन् पूज्यमाने, 'योगिराडुत्थित' इति, अयात इति च आकर्ण्य, कर्णपरम्परया बहवो जनाः परितः स्थिताः। सुघटितं शरीरम्, सान्द्रां जटाम्, विशालान्यङ्गानि, अङ्गाग्रप्रतिमे नयने, मधुरां गम्भीराञ्च वायं वर्णयन्तश्चकिता इव सआताः।

## 9.2 मूलपाठ

**''विष्णोर्माया भगवती यया सम्मोहितं जगत्।'' (भागवतम् 10।1। 24)**

टिप्पणी

**''हिंस्रः स्वपापेन विहिंसितः खलः**
**साधु समत्वेन भयाद् विमुच्यते।'' (भागवतम्, 10। 7। 31)**

**अन्वयार्थ**- वह विष्णु की माया ऐश्वर्य शालिनी है, जिसने सम्पूर्ण जगत् को मोह में डाल रखा है। दुष्ट हिंसक अपने पाप से मारा गया और सज्जन समत्वभाव के कारण भय से बच गया।

**व्याख्या**- गद्यकाव्य मे विराम रूप विभाग की परिकल्पना की गई है। ग्रन्थ के प्रथम विराम मे ''समाप्तिकामो मंगलमाचरेत्'' इस शिष्टाचार अनुमित श्रुति को अनुसरण करके ग्रन्थ के निर्विघ्न समाप्ति के लिए तथा शिष्यों को शिक्षा के लिए मंगलाचरण का विधान किया जाता है। इस कारण कवि अम्बिकादत्त व्यास ने भागवत के दो श्लोकों को प्रस्तुत किया है। मंगलाचारण तीन प्रकार का होता है- आशीर्वादात्मक, नमस्कारात्मक और वस्तुनिर्देशात्मक।

'विष्णोर्माया' इस श्लोकार्ध प्रस्तुति से देवताओं को नमस्कारात्मक मंगल को स्थापित किया है। नमस्कार हि नमस्कार कर्ता के अपकर्ष बोधन का नमस्कार करने से उत्कर्ष बोधन होता है। क्योंकि जगत का उस माया के अधीनता के कथन से जगत में विद्यमान सभी से उत्कृष्ट विष्णु का बोध होता है। इस प्रकार विष्णु के नमस्कार विधान से नमस्कारात्मक मंगल होता है।

विष्णु चराचर जगत को व्याप्त करता है। उस नारायण की जो भगवती भग प्रभृति षड् ऐश्वर्य सम्पन्न माया है वह समस्त संसार को मोहित करती है। मोह ही अविवेक है। मोहित व्यक्ति विवेचन के लिए असमर्थ होता है। जैसे किसी विषय में तन्मय युक्त जन को अन्य किसी विषय का ज्ञान नहीं रहता, उसी प्रकार माया से मोहित जन भी माया निर्मित लौकिक वस्तु जगत को छोड़कर अलौकिक परमेश्वर तत्त्व को नहीं समझ पाता।

वह माया भगवती है। माया शक्ति भगवत से भिन्न नहीं है। जैसे दाहिका शक्ति अग्नि से भिन्न नहीं होती। उसी प्रकार माया की शक्ति भी भगवत विष्णु से भिन्न नहीं है। शक्ति और शक्तिमान् में कोई भेद नहीं होता है। अतः जैसे भगवान षड् ऐश्वर्य सम्पन्न है वैसे ही भगवान की शक्तिरुपा माया भी षड् ऐश्वर्यशाली है। भग का अर्थ भगवान् है। भग शब्द का अर्थ के प्रसंग मे कहा गया -

**ऐश्वर्यस्य समग्रस्य धर्मस्य यशसः श्रियः।**
**ज्ञानवैराग्ययोश्चैव षण्णां भग इतीरिणा ॥**

ये ऐश्वर्यादि षड्गुण भगवान में पूर्णतया सदैव विराजमान होते हैं। भगवान से भिन्न उसकी शक्ति में भी ये षड्गुण विद्यमान रहते हैं। अतः इस शक्ति को ही भगवती कहते हैं। इस भगवान की शक्ति भगवती माया को पुराणो में दुर्गा काली आदि कहा गया है। वह त्रिगुणात्मक है। इन तीनों गुणों में तम अन्यतम है। आवरण का ही नाम तम है। जैसे प्रकाश तम से आवृत होता है उसी प्रकार माया के तमोगुण से ज्योतिः स्वरुप परमतत्त्व भी आवृत होता है।

कवि अम्बिकादत्त व्यास ने श्लोक ने अर्द्धांश में वस्तुनिर्देशात्मक मंगलाचरण का विधान किया है। काव्य में हिंसक दुष्कर्म यवन शासकों पर महाराज शिवराज (शिवाजी) की विजय रुप उन्नति को प्रदर्शित किया है। अतः यहा वस्तुनिर्देशात्मक मंगलाचरण है।

श्लोक के अन्तिम भाग में आशीर्वादात्मक मंगलाचरण को प्रस्तुत किया है। पातक मानव नरक में गिरते है। दुर्जन दुष्कर्मो को करते हुए पापों से काल ग्रसित होते हैं। जैसे कंस आदि पापी अपने पाप से नष्ट हुए। कहा भी गया है-अनार्यजुष्टेन पथा प्रवृतानां शिवं कुतां। साधुजन अपने सत्कर्मो से मोक्ष को प्राप्त होते हैं। सत्कर्मो से ही धर्म होता है। इस धर्म की रक्षा की जाती है, धर्म भी उन पुरुषों द्वारा रक्षित होता हुआ उन लोगों की रक्षा करता है। जैसा कि युधिष्ठिर आदि पाण्डव विपत्ति में गिरे हुए भी अपने अर्जित पुण्य से अभ्युदय को प्राप्त हुए। गीता मे कहा भी गया है ''स्वल्पमप्यस्य धर्मस्य त्रायते महतो भयात्। ''इस प्रकार दुर्जन निन्दा और सज्जन प्रशंसा से सहृदय पाठकों के लिए मंगलाचरण किया गया है।

### व्याकरणविमर्श -

**भगवती**- भगः अस्य अस्य अस्तीति विग्रहे भगशब्दात् मतुपि भगवत् इति शब्दो निष्पद्यते। ततः स्त्रियां गीपि सौ भगवती इति रूपम्।

**स्वपापेन**- स्वं पापं स्वपापम्, तेन स्वपापेनेति कर्मधरयसमासः।

**विहिंसितः**-विपूर्वकात् हिंस्धतोः क्तप्रत्यये विहिंसितशब्दो निष्पकः। ततः सौ विहिंसितः इति रूपम्।

**कोषः**- ''विष्णर्नारायणः कृणों वैकुण्ठों विष्टरश्रवाः'' इत्यमरः।
अथो जगती लोको विष्टपं भुवनं जगत् इत्यमरः।
दरस्त्रासों भीतिर्भीः साध्वसं भयम्'' इत्यमरः।

## पाठगत प्रश्न 9.1

1. किस से जगत मोहित है?
2. कौन अपने पाप से विनष्ट होता है?
3. कौन किस भय से मुक्त होते हैं?
4. विष्णोर्माया इस पद से कैसा मंगलाचरण है?
5. हिंस्रः इस पद से कैसा मंगलाचरण है?

## 9.3 मूलपाठ

''अरुण एष प्रकाशः पूर्वस्यां भगवतो मरीचिमालिनः। एष भगवान् मणिराकाशमण्डलस्य, चक्रवर्ती खेचरचक्रस्य, कुमण्डलमाखण्डलदिशः, दीपको ब्रह्माण्डभाण्डस्य, प्रेयान् पुण्डरीकपटलस्य, शोकविमोकः, कोकलोकस्य, अवलम्बो रोलम्बकदम्बस्य, सूत्रधरः सर्वव्यवहारस्य, इनश्च दिनस्य। अयमेव अहोरात्रं जनयति, अयमेव वत्सरं द्वादशसु भागेषु विभनक्ति, अयमेव कारणं षण्णामृतूनाम्,

टिप्पणी

एष एवाडीगकरोति उत्तरं दक्षिणं चायनम्, ,नेनैव सम्पादिता युगभेदाः, एनेनैव कृताः कल्पभेदाः, एनमेवाश्रित्य भवति परमेष्ठिनः परार्धसङ्ख्या, असावेव चर्कर्ति बर्भर्ति जर्हर्ति च जगत्, वेदा एतस्यैव वन्दिनः, गायत्री अमुमेव गयति, ब्रह्मनिष्ठा ब्राह्मणा अमुमेवाहरहरुपतिहन्ते। धन्य एष कुलमूलं श्रीरामचन्द्रस्य, प्रणम्य एष विश्वेषामि'' ति उदेष्यन्तं भास्वन्तं प्रणमन् निजपर्णकुटिरात् निश्चक्राम कश्चित् गुरुसेवनपटुर्विप्रवटुः।

**अन्वयार्थः**- पूर्व दिशा में भगवान् सूर्य का यह लाल (प्रकाश) है। यह भगवान् (सूर्य) आकाश मण्डल के मणि, नक्षत्र समूह के चक्रवर्ती (सम्राट्) इन्द्र (पूर्व) की दिशा के कुण्डल, ब्रह्माण्ड रूपी गृह के दीपक, कमलकुल के अत्यन्त प्रेमपात्र, चक्रवाक समुदाय के शोक को दूर करने वाले, भ्रमर-समूह के अवलम्ब सम्पूर्ण व्यवहार के सूत्रधर (प्रवर्तक) और दिन के स्वामी हैं। ये ही दिन-रात के जनक है, ये ही वर्ष को बारह भागों में विभाजित करते हैं, छः ऋतुओं के ये ही कारण हैं, ये ही उत्तर और दक्षिण अयन (सूर्य मार्ग) को अंगीकार करते हैं। इन्होंने ही युगभेद (सतयुग, त्रेतायुग, द्वापरयुग तथा कलियुग का भेद) सम्पादित किया है, इन्हीं के द्वारा कल्पभेद (चारों युग के सहस्र क्रम को कल्प कहते हैं।) किया गया है, इन्हीं के आश्रय से ब्रह्मा की सबसे बड़ी ओर अन्तिम संख्या (पूर्ण) होती है, ये ही संसार का बार-बार सृजन, भरण-पोषण तथा संहार करते हैं, वेद भी इन्हीं की वन्दना करते हैं, गायत्री इन्हीं का मान करती है, ब्रह्मनिष्ठ ब्राह्मण इन्हीं की प्रतिदिन उपासना करते हैं। ये (भगवान् सूर्य) श्री रामचन्द्र के कुल के मूल (आदि पूर्वज) धन्य हैं, ये विश्व को प्रणाम करने योग्य हैं- (इस प्रकार सोचकर) उदित होते हुये भगवान् सूर्य को प्रणाम करता हुआ, (एक) कोई गुरुसेवा में पटु ब्राह्मण बालक अपनी पर्णकुटी से निकला।

**व्याख्या**- यहाँ सूर्य का वर्णन किया जाता है। उस सूर्य का प्रकाश लोहितवर्ण युक्त एवं रक्तवर्ण आभासित है। यह सूर्य आकाश में स्थित नक्षत्रों में रत्न के समान है। यह सूर्य पक्षी समुदाय का राजा है। यह पूर्व दिशा के कर्णाभूषण के समान है। अर्थात् पूर्व दिशा का अलंकार है। ब्रह्माण्ड के दीपक के समान है। वह अपने प्रकाश से सम्पूर्ण पृथ्वी को प्रकाशित करता है सूर्य के प्रकाश से ही कमलवृन्द के पुष्प खिलते हैं। रात्रि में चक्रवाक पक्षियों का अपनी प्रियतमों के साथ वियोग हो जाता है। प्रातः सूर्य के आगमन पर पुनः उनका मिलन होता है। इस वियोग के कारण उत्पन्न दुःख का नाशक भी सूर्य है। मधुकर भँवरे मधु का आहार करके जीवित रहते है। वे पुष्पों से मधु को स्वीकार करते हैं। सूर्य के उदय होने पर ही पुष्प विकसित होते हैं। इसलिए सम्पूर्ण मधुकर समुदाय का आधार सूर्य है। सभी प्रकार के शुभ कार्यों के अनुष्ठान दिन में किये जाते हैं। उन समस्त कार्यों के प्रवर्तक सूर्य है। क्योंकि सूर्य के उदय होने पर ही दिन कहा जाता है। अतः यह दिन का स्वामी है। सूर्य के प्रभाव से ही दिन और रात्रि होती है। भास्कर अर्थात् सूर्य की गति से ही दिनों की गणना होती है। उसी के प्रभाव से छः ऋतु, प्रकृति में दिखाई देती हैं। इसकी गति उत्तरायन एवं दक्षिणायन दो प्रकार की होती हैं। सूर्य ही सतयुग, त्रेतायुग, द्वापरयुग एवं कलियुग का सम्पादक है। दो हजार देवयुगात्मक काल भेद को कल्प कहते है (200 सत्सरात्मक देवयुग-1 कल्पयुग) इस कल्प का परिचालक भी सूर्य है। ब्रह्मा के परार्द्धपर्यन्त संख्या गणना सूर्य पर आश्रित होती है। यह सूर्य ही जगत को पुनः पुनः सर्जन, पालन एवं नाश करता है। ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद और अथर्ववेद ये चार वेद है। वेदों में अधिकता से सूर्य की ही स्तुति है। गायत्री मन्त्र का देवता

सूर्य ही है। ब्राह्मण प्रतिदिन सूर्य की उपासना करते हैं। सूर्यवंश का यह आदिपुरुष भास्कर सूर्य को प्रणाम करके गुरुसेवानिष्ठ ब्राह्मण पुत्र अपनी पर्णकुटी से बाहर आया।

### व्याकरणविमर्शः-

**मरीचिमालिनः**- मरीचीनां माला मरीचिमाला इति षष्ठीतत्पुरुषसमासः। मरीचिमाला अस्य अस्तीति मरीचिमाली इति ''अत इनिठनौ'' इत्यनेन इनिप्रत्ययः।

**खेचरचक्रस्य**- खे चरन्ति ये ते खेचराः विहगाः इत्यर्थः। तेषां खेचराणां चक्रं खेचरचक्रम, तस्य इति षष्ठीतत्पुरुषसमासः।

**ब्रह्माण्डभाण्डस्य**-ब्रह्माण्डमेव भाण्डं ब्रह्माण्डभाण्डम्, तस्य इति कर्मधरयसमासः।

**पुण्डरीकपटलस्य**-पुण्डरीकाणां पटलं पुण्डरीकपटलम्, तस्य इति षष्ठीतत्पुरुषसमासः।

**रोलम्बकदम्बस्य**- रोलम्बानां कदम्बः रोलम्बकदम्बः, तस्य इति षष्ठीतत्पुरुषमासः।

**निजपर्णकुटीरात्**- पर्णानां कुटीरः पर्णकुटीरः। निजस्य पर्णकुटीरः निजपर्णकुटीरः, तस्मात् निजपर्णकुटीरात् इत्युभयत्र षष्ठीतत्पुरुषसमासः।

**विप्रवटुः** -विप्रश्चासौ वटुः इति कर्मधरयसमासः। ब्राह्मणबालकः इत्यर्थः।

**जनयति**-जनधतोः णिचि लटि तिपि जनयतीति रूपम्। अत्र ''बुधयुधनशजनेङ्प्रुदुस्रुभ्यो णेः'' इत्यनेन परस्मैपदम्।

**चर्कर्ति**- डुकृञ् करणे इति धतोः यूङ्लुकि लटि तिपि चर्कर्ति इति रूपम्।

**कुटीरः**-द्वस्वा कुटी इत्यर्थे ''कुटीशमीशूण्डाभ्यो रः'' इत्यनेन रप्रत्यये कुटीरशब्दो निष्पन्नः।

**उपतिष्ठन्ते**- उपपूर्वकात् स्थाधतोः लटि ''उपाछेवपूजासङ्गतिकरणमित्रकरणथिष्वति वक्तव्यम्'' इत्यनेन आत्मनपदे प्रथमबहुवचने झप्रत्यये उपतिष्ठन्ते इति रूपम्।

## पाठगत प्रश्न-9.2

6. पूर्व दिशा में किसका प्रकाश है?
7. सूर्य आकाश मण्डल का क्या है?
8. सूर्य किसका चक्रवर्ती है?
9. ब्रह्माण्ड भाण्ड का दीपक कौन है?
10. सूर्य किसका शोक विमोचक है।
11. यह वत्सर वर्ष कितने भागों में विभक्त है?
12. 'उपतिष्ठन्ते' आत्मनेपद कैसे है?

टिप्पणी

13. 'जनपति' पर परस्मैपद कैसे है।

14. सूर्य किसके कुल का मूल है?

## 9.4 मूलपाठ

''अहो चिररात्राय प्रसुप्तोऽहम्, स्वप्नजालपरतन्त्रेणैव महान् पुण्यमयः समयोऽतिवाहितः, सन्ध्योपासनसमयोऽयमस्मद्गुरुचरणानाम्, तत् सपदि अवचिनोमि कुसुमानि।'' इति चिन्तयन् कदलीदलमेकमाकुञ्च्य, तृणशकलैः सन्धाय, पुटकं विधाय, पुष्पावचयं कर्तुमारेभे।

वटुरसौ आकृत्या सुन्दरः, वर्णेन गौरः, जटाभिर्ब्रह्मचारी, वयसा षोडशवर्षदेशीयः, कम्बुकण्ठः, आयतललाटः, सुबाहुर्विशाललोचनश्चासीत्।

**अन्वयार्थः**- 'ओह! मैं बहुत देर तक सोता रहा, मैंने निद्रारूपी जाल में फंसकर अत्यन्त पुण्यमय समय बिता दिया, यह हमारे पूज्य गुरु जी के सन्ध्या वन्दन का समय है। इसलिये शीघ्र ही फूल तोड़ता हूँ' (उस विप्रबटु ने) इस प्रकार सोचते हुए एक केले के पत्ते को तोड़कर (उसे) तिनकों से जोड़कर, पुटक (दोना) बनाकर फूल तोड़ना प्रारम्भ कर दिया।

वह बटु (ब्रह्मचारी) सुन्दर आकृति वाला था, गौर वर्ण का था, जटाओं से ब्रह्मचारी प्रतीत होता था, लगभग सोलह वर्ष की अवस्था वाला था, कम्बु (शंख) तुल्य कण्ठ वाला, विस्तृत मस्तक वाला, सुबाहु (सुन्दर भुजाओं वाला) तथा विशाल नेत्रों वाला था।

**व्याख्या**- उसके बाद वह बालक सोचता है कि वह बहुत काल तक सोता रहा। उसने निद्रा के वशीभूत होकर पुण्यमय काल को व्यतीत कर दिया। अब सन्ध्योपासना एवं गुरुचरण सेवा का समय हो गया है। अतः शीघ्र ही पुष्पों को संग्रह के लिए एक केले के पत्ते को तोड़कर उसे तृण से सिलकर पुष्पचयन का पात्र बनाकर पुष्प चयन करना आरम्भ किया। वह बालक सुन्दर शरीर, 'श्वेतवर्ण, जटाओं से ब्रह्मचारी, सोलह वर्षीय शंख के समान गर्दन वाला, विशाल मस्तक वाला, सुन्दर भुजाओं वाला, विस्तृत नेत्रों वाला था।

### व्याकरणविमर्श

**स्वप्नजालपरतन्त्रेण**- स्वप्न एव जालं स्वप्नजालमिति कर्मधरयसमासः। तस्य परतन्त्रेण स्वप्नजालपरतन्त्रेण इति षष्ठीतत्पुरुषसमासः।

**कदलीदलम्**- कदल्याः दलं कदलीदलम् इति षष्ठीतत्पुरुषसमासः।

**तृणशकलैः**- तृणानां शकलैः तृणशकलैः इति षष्ठीतत्पुरुषसमासः।

**पुष्पावचयम्**- पुष्पाणाम् अवचयः पुष्पावचयः, तं पुष्पावचयम् इति षष्ठीतत्पुरुषसमासः।

**कम्बुकण्ठः**- कम्बुरिव कण्ठो यस्य स कम्बुकण्ठः इति बहुव्रीहिः।

**आयतललाटः**- आयतं ललाटं यस्य स आयतललाट इति बहुव्रीहिः।

**विशाललोचनः**- विशाले लोचने यस्य स विशाललोचनः इति बहुव्रीहिसमासः।

**षोडशवर्षदेशीय:**-षोडशवर्षशब्दाद् ''ईषदसमाप्तौ कल्पब्देश्य-देशीयर:'' इत्यनेन सूत्रेण देशीयर्-प्रत्यये षोंडशवर्षदेशीय: इति रूपम्।

**कोष:-** शङ्ख: स्यात्कम्बुरस्त्रियाम् इत्यमर:।
ललाटमलिंक गोधि: इत्यमर:।
लोचनं नंयन नेत्रमीक्षणं चक्षुरक्षिणी इत्यमर:।

## पाठगत प्रश्न-9.3

15. गौरवटु द्वारा महान पुण्य का समय कैसे व्यतीत किया?

16. इस समय किसके सन्ध्योपासना का समय है?

17. किसलिये गौरवटु पुष्पों का चयन करता है?

18. गौरवटु कैसा था?

## 9.5 मूलपाठ

कदलीदलकुञ्जायितस्य एतत्कुटीरस्य समन्तात् पुष्पवाटिका, पूर्वत: परम-पवित्र-पानीयं परस्सहस्त्र-पुण्डरीक-पटल-परिलसितं पतत्रिकुल-कूजितपूजितं पय:पूरितं सर आसीत्।

दक्षिणतश्चैको निर्झर-झर्झर-ध्वनित-दिगन्तर:, फल-पटलाऽऽस्वाद-चपलित-चञ्चु-पतङ्गकुलाऽऽ-क्रमणाधिक-विनत-शाख-शाखि-समूह-व्याप्त: सुन्दरकन्दर: पर्वतखण्ड आसीत्।

**अन्वयार्थ**- केले के पत्तों से घिरे हुए होने के कारण कुञ्ज के समान प्रतीत होने वाले उस कुटीर के चारों ओर पुष्पवाटिका थी, पूर्व में परम पवित्र जल वाला, सहस्रों (से अधिक) श्वेत कमल-समूह से पूर्ण तथा पक्षिकुल के कूजन से युक्त जल से भरा हुआ तालाब था। दक्षिण दिशा में झरने की झर-झर ध्वनि से मुखरित दिशाओं वाला, फलों के आस्वाद से चञ्चल चोंच वाले पक्षिकुल के आक्रमण से अधिक झुकी हुई शाखाओं वाले वृक्ष-समूह से व्याप्त तथा सुन्दर कन्दराओं (गुफाओं) वाला एक पर्वतखण्ड (पहाड़ी) था।

**व्याख्या**- गौर सिंह जिस कुटिया में रहता था उसके चारों दिशाओं मे फैले हुए मनोहारी पुष्प व पादप थे। उन्हीं से वह कुटिया सुशोभित थी। चारो ओर पुष्पों के उद्यान थे। इसके पूर्व में जल से परिपूर्व सरोवर था जिसके पवित्र जल में हजारों श्वेत कमल शोभित हो रहे थे। पक्षियों के कलरव ध्वनि से सदैव मुखरित था गुञ्जायमान था। उस कुटिया के दक्षिण दिशा की ओर एक पर्वत खण्ड था जिसके वृक्ष पक्षी कुलों से सुशोभित थे। सुन्दर कन्दराओं से सुशोभित उस पर्वतखण्ड से निकलते हुए झरनों की ध्वनि से चारों दिशा, गुञ्जायमान थी।

टिप्पणी

**व्याकरणविमर्शः**

**कदलीदलकुञ्जायितस्य**- कदलीनां दलाति कदलीदलाति इति षष्ठीतत्पुरुषसमासः, तैः कुञ्जायित इति तृतीयातत्पुरुषसमासः, तस्य।

**परमपवित्रपानीयम्**- परमं च तत् पवित्रं चेति कर्मधरयः, तादृशं पानीयं यस्य तत् इति बहुव्रीहिसमासः।

**परस्सहस्रपुण्डरीकपटलपरिलसितम्**- परस्सहस्राणि इति निपातनात् समासः। ''पारस्करप्रभृतीनि च संज्ञायाम्'' इति सुडागमः। परस्सहस्राणि पुण्डरीकाणि इति कर्मधरयसमासः। तेषां पटलमितिषष्ठीतत्पुरुषसमासः। तेन परिलसितमिति तृतीयातत्पुरुषसमासः।

**पतत्रिकुलकूजितपूजितम्**- पतत्रिणां कुलं पतत्रिकुलमिति षष्ठीतत्पुरुषसमासः। तस्य कूजितमिति षष्ठीतत्पुरुषसमासः। तेन पूजितमिति तृतीयातत्पुरुषसमासः।

**निर्झरझर्झरध्वनिधवनितदिगन्तरः**- झर्झररूपः ध्वनिः झर्झरध्वनिः शाकपार्थिवादिवत् समासः। निर्झराणां झर्झरध्वनिरिति षष्ठीतत्पुरुषसमासः। तेन ध्वनितानि इति तृतीयातत्पुरुषसमासः। तादृशानि दिगन्तराणि यस्य स इति बहुव्रीहिसमासः।

**फलपटलाऽऽस्वादचपलिचञ्चुपतङ्गः** इति तृतीया- तत्पुरुषः। तादृशाः चञ्चवः योषां ते फलपटलास्वादचपलितचञ्चवः इति बहुव्रीहिः। तादृशाः पतङ्गा इति कर्मधारयसमासः। तेषां कुलमिति षष्ठीतत्पुरुषः। तस्य आक्रमणम् इति षष्ठीतत्पुरुषः। तेन आक्रमणेन अधिकविनताः इति तृतीयातत्पुरुषः। अधिकविनताः शाखाः येषां ते अधिकविनताशाखा इति बहुव्रीहिः। तादृशाः शाखिनः इति कर्मधारयः। तेषां समूह इति षष्ठीतत्पुरुषः। तेन व्याप्त इति तृतीयातत्पुरुषः।

**सुन्दरकन्दरः**- सुन्दराः कन्दराः यस्मिन् स इति बहुव्रीहिसमासः।

**कोष**- कदली वाणरबुसा रम्भा मोचांशुमफला इत्यमरः।
स्त्रियः सुमनसः पुष्पं प्रसूनं कुसुमं सुमम् इत्यमरः।
वृक्षों महीरुहः शाखी विटपी पादपस्तरुः इत्यमरः।
दरी तु कन्दरो वा स्त्री इत्यमरः।

## पाठगत प्रश्न-9.4

19. कुटिया कैसी थी?
20. कुटिया के चारों ओर क्या था?
21. कुटिया के पूर्व में तालाब कैसा था?
22. कुटिया के दक्षिण दिशा में क्या था?
23. निर्झरझर्झरध्वनिध्वनितदिगन्तरः में समास लिखिए।
24. परमपवित्रपानीयम् में समास लिखिए।

## 9.6 मूलपाठ

यावदेष ब्रह्मचारी वटुरलिपुअमुद्धूय कुसुमकोरकानवचिनोति, तावत् तस्यैव सतीर्थ्योऽपरस्तत्समानवयाः कस्तूरिका-रेणुरूषित इव श्यामः चन्दनचर्चित-भालः कर्पूरागुरु-क्षोदच्छुरित-वक्षो-बाहु-दण्डः, सुगन्धपटलै-रुन्लिद्रयन्निव निद्रामन्थराणि कोरकनिकुरम्बकान्तरालसुप्तानि मिलिन्दवृन्दानि झटिति समुपसृत्य निवारयन् गौरवटुमेवमवादीत्-

'अलं भो अलम्! मयैव पूर्वमवचितानि कुसुमानि, त्वं तु चिरं रात्रावजागरीरिति क्षिप्रं नोत्थपितः, गुरुचरणा अत्र तडागतटे सन्ध्यामुपासन्ते, संस्थापिता मया निखिला सामग्री तेषां समीपे। यां च सप्तवर्षकल्पाम्, यवनत्रासेन निःशब्दं रुदतीम्, परमसुन्दरीम, कलितमानवदेहामिव सरस्वतीं सान्त्वयन्, मरन्दमधुरा अपः पाययन्, कन्दखण्डानि भोजयन्, त्वं त्रियामाया यामत्रमनैषीः, सेयमधुना स्वपिति, उदुद्ध्य चपुनस्तथैव रेदिष्यति, तत्परिमार्गणीयान्येतस्याः पितारौ गृहं च-'

इति संश्रुत्य उष्णं निःश्वस्य यावत् सोपि किञ्चिद् वक्तुमियेष तावदकस्मात् पर्वतशिखरे निपपात तयोर्दृष्टिः।

**अन्वयार्थः-**

जैसे ही यह ब्रह्मचारी बटु भ्रमर समूह को उड़ाकर फूलों की कलियों को तोड़ने लगा, उसी समय उसी का सहपाठी समान अवस्था वाला एक-दूसरा (ब्रह्मचारी), कस्तूरिका के चूर्ण से सना हुआ (छरित) सा श्याम वर्ण वाला, चन्दन से लिप्त ललाट वाला तथा कपूर और अगुरु के चूर्ण से व्याप्त (शोभित) वक्षस्थल एवं भुजाओं वाला (वह) निद्रा से अलसाये हुये तथा कोरक कदम्बों (कलियों) के अन्तराल में (अन्दर) सोए हुए भ्रमर समूहों को सुगन्ध को अधिकता से जागता हुआ-सा एकाएक (सहसा) समीप में आकर उस गौर बटु को (फूल तोड़ने से) रोकता हुआ इस प्रकार बोला-

''बस, भाई बस! पहले ही मैंने फूल तोड़ लिये हैं, तुम देर तक रात्रि में जगते रहे, इसलिये शीघ्र तुम्हें नहीं जगाया, (इस समय) गुरू जी यहाँ तालाब के किनारे सन्ध्योपासना कर रहे हैं, मैंने सभी (पूजन) सामग्री उनके पास रख दी है। और जिसे, लगभग सात वर्ष वाली, यवनों (मुसलमानों) के भय से निःशब्द रोती हुई, परम सुन्दरी तथा मानव-शरीर धारण करने वाली सरस्वती के समान कन्या को सान्त्वना प्रदान करते हुए पुष्प रस से मीठे जल को पिलाते हुए तथा कन्द-खण्डों को खिलाते हुए, रात्रि के तीन पहर व्यतीत कर दिये थे, वह (कन्या) इस समय सो रही है, उठकर पुनः वैसे ही रोयेगी, अतः उसके माता-पिता और गार का पता लगाना चाहिए।'' यह सुनकर, गर्म साँस लेकर जब तक उस (गौरबटु) ने भी कुछ कहना चाहा तभी अचानक उन दोनों की दृष्टि पर्वत-शिखर पर पड़ी।

**व्याख्या**- जब गौरसिंह वटु भ्रमर कुल को हटाकर पुष्पों का चयन कर रहा था तब उसके साथ अध्ययन करने वाला व समान श्यामवटु आया। श्यामवटु देखने से अतीव श्यामल था। उसका मस्तक चन्दन लेपित, वक्षःस्थल कपूर एवं अगुरु के चूर्ण से लिप्त था। वह शीघ्र ही आकर पुष्प चयन के बीच में ही निद्रा से उठाये मधुरकर वृन्द के पास आकर दूर करता हुआ गौर वटु को बोला कि पुष्पचयन का प्रयोजन नहीं है। मेरे द्वारा पहले ही पुष्प चुने जा

टिप्पणी

चुके हैं। गौरबटु रात्री में बहुत समय तक जगा था अतः प्रातः नहीं उठ सका। गुरु जी तालाब के किनारे सन्ध्यावंदन कर रहे है। उनके सन्ध्यावंदन के सभी द्रव्यों को श्यामवटु ने स्थापित कर दिये थे। उसके बाद कहता है कि यवनों के भय से रोती हुई सात वर्षीय कन्या को सान्त्वना देते हुए, जल पिलाते हुए, मुनियों को भोजन खिलाते हुए तुमने रात्रि के तीन प्रहर व्यतीत कर दिये थे वह कन्या अब सो रही है। उसका रोना उसी प्रकार न हो इसलिए उसके माता-पिता, और गार एवं भवन को खोजना चाहिए। ऐसा सुनकर गौरसिंह जब कहने के लिए उद्यत हुआ तब ही अचानक दोनों की दृष्टि पर्वत की चोटी पर पड़ी।

## व्याकरणविमर्श :

**कुसुमकोरकान्**- कुसुमानां कोरकाः कुसुमकोरकाः, तान् इति षष्ठीतत्पुरुषः।

**तत्समानवयाः**- तस्य समानः तत्समानः इति षष्ठीतत्पुरुषः। तत्समानं वयः यस्य स इति बहुव्रीहिसमासः।

**कस्तूरिकारेणुरुषितः**- कस्तूरिकाणां रेणवः कस्तूरिकारेणवः इति षष्ठीतत्पुरुषः। तैः रूषितः इति तृतीयातत्पुरुषः।

**चन्दनचर्चितभालः**- चन्दनेन चर्चितं चन्दनचर्चितमिति तृतीयातत्पुरुषः। चन्दनचर्चितं भालं यस्य स इति बहुव्रीहिः।

**कर्पूरागुरुक्षोदच्छुरितवक्षोबाहुदण्डः**- कर्पूरमिश्रितः अगुरुः कर्पूरागुरुः इति शाकपार्थिवादिवत्समासः। तस्य क्षोदः इति षष्ठीतत्पुरुषः। तेन छुरितम् इति तृतीयातत्पुरुषः। कर्पूरागुरुक्षोदच्छुरितं वक्षोबाहुदण्डं यस्य स कर्पूरागुरुक्षोदच्छुरित-वक्षोबाहुदण्डः इति बहुव्रीहिः। वक्षश्च बाहुदण्डौ च वक्षबाहुदण्डमिति समाहारद्वन्द्वः।

**मिलिन्दवृन्दानि**- मिलिन्दानां वृन्दानि इति षष्ठीतत्पुरुषः।

तडागतटे-तडागस्य तटः तडागतटः, तस्मिकिति षष्ठीतत्पुरुषः।

**यवनत्रासेन**- यवनेभ्यः त्रासेन यवनत्रासेनेति पञ्चमीतत्पुरुषः।

**कलितमानवदेहाम्**- मानवानां देहः मानवदेहः इति षष्ठीतत्पुरुषः। कलितो मानवदेहः यया सा, ताम् इति बहुव्रीहिः।

**समुपसृत्य**- समुपसंघातपूर्वकात् सृधातोः ल्यपि सभुपसृत्य इति।

**निवारयन्**- निपूर्वकाद् वारिधातोः शतरि पुंसि सौ निवारयन् इति।

**अवादीत्**- वदेर्लुङि तिपि अवादीत् इति।

**अवचितानि**- अवपूर्वकात् चिनोतेः कर्मणि क्तप्रत्यये नपुंसके जसि रूपम्।

**अजागरीः**- जागर्तेः लुङि सिपि अजागरीः इति रूपम्।

**उत्थापितः**- उत्पूर्वकात् स्थाधर्तोः णिचि कर्मणि क्तप्रत्यये पुंसि सौ उत्थापितः इति रूपम्।

**सान्त्वयन्**- सान्त्व्-धतोः शतरि पुंसि सुप्रत्यये सान्त्वयन् इति।

**कोष** - स्यान्निकायः पुंजराशिः इत्यमरः।
सतीर्थ्यास्त्वेकगुरवः इत्यमरः।
कुलं रोधश्च तीरंच प्रतीरंच तटं त्रिषु इत्यमरः।

## पाठगत प्रश्न-9.5

25. श्यामवटु कैसा था?
26. आचार्य कहाँ सन्ध्यावन्दन करते थे?
27. श्यामवटु ने क्या स्थापित किया?
28. गौरवटु कैसे तीन प्रहर जागे?
29. गौरवटु ने क्या पिलाया?
30. वह कन्या क्यों रो रही थी?
31. गौरवटु और श्यामवटु क्या खोजना चाहते थे।
32. गोरवटु और श्यामवटु कि दृष्टि कहाँ पड़ी।

## 9.7 मूलपाठ

तस्मिन् पर्वते आसीदेको महान् कन्दरः। तस्मिन्नेव महामुनिरेकः समाधौ तिष्ठति स्म। कदा स समाधिमङीग्कृतवानिति कोऽपि न वेत्ति। ग्रामणी-ग्रामीण-ग्रामाः समागत्य मध्ये मध्ये तं पूजयन्ति, प्रणमन्ति स्तुवन्ति च। तं केचित् इति, अपरे लोमश इति, इतरे जैगीषव्य इति अन्ये च मार्कण्डेय इति, विश्वसन्ति स्म। स एवायमधुना शिखरादवतरन् ब्रह्मचारिवटुभ्यामदर्शि।

**अन्वयार्थ**- उस पर्वत पर एक बहुत बड़ी गुफा थी। उसी में एक महामुनि समाधि में स्थित थे। इन्होंने कब समाधि लगाई, यह कोई नहीं जानता। गाँव के प्रधान तथा गाँवों के लोग बीच-बीच (कभी-कभी) यहाँ आकर उनका पूजन, प्रणाम और स्तवन किया करते थे। उनको कोई कपिल, कोई लोमेश, कोई जैगीषव्य और कोई मार्कण्डेय समझता था। वही इस समय (पर्वत) शिखर से उतरे हुए (उन) दो ब्रह्मचारी बालकों के द्वारा देखा गया।

**व्याख्या**- युगों युगों से उस पर्वत की गुफा में एक योगिराज मुनिप्रवर समाधि में तल्लीन हैं। उसके वास्तविक स्वरूप को कोई नहीं जानता है। कुछ कपिल, कुछ जैगीषव्य, कुछ लोमेश और कुछ मार्कण्डेय मानते हैं। कपिलमुनि सांख्यशास्त्र के सिद्धान्तों के प्रवर्तक मुनि है। भागवत

टिप्पणी

वचन से प्रतीत होता है कि वे विष्णु के अंशावतार थे ''सिद्धानां कपिलो मुनिरिति''। जैगीषव्य महाभारत काल के प्रख्यात सिद्ध महर्षि है। वे योग बल से आत्तशक्तियुक्त सर्वलोकचारी थे। महाभारत के वर्णनानुसार लोमेश ऋषि ने अनेक बार पृथिवी की प्रदक्षिणा की थी। भगवान व्यास से आदेशित होकर वे पाण्डवों को वनवासकाल में अनेक बार तीर्थस्थलों पर दिखाई दिये। मुनि के पुत्र मार्कण्डेय भगवान शिव की आराधना करके चिरंजीवी हो गये। ग्रामपति तथा समस्त ग्रामजनों ने पास में जाकर बीच-बीच में उनकी पूजा आदि से निवेदन किया था किन्तु योगिराज ने समाधि भंग नहीं की। चित्तवृतियों के निरोध को योग कहते हैं। योग की चरम अवस्था समाधि है। ध्यान की विशेष अवस्था जिसमे तत्व साक्षात्कार होता है उसे समाधि कहते हैं। उससे बाह्य कोई व्यवहार उसके चित को स्पर्श नहीं करता। अतः पूजा आदि से भी वे समाधि से नहीं उठे। ऐसे वे योगिराज इस समय पर्वत से नीचे उतरते हुए श्याम व गौर वटु को दिखाई दिये।

### व्याकरणविमर्श -

**महामुनिः**- महान् चासौ मुनिः महामुनिः इति कर्मधारयसमासः।

**ग्रामणीग्रामीणग्रामाः**- ग्रामण्यश्च ग्रामीणश्च ग्रामणीग्रामीणः इतरेतरद्वन्द्वसमासः। तेषां ग्रामाः ग्रामणीग्रामीणग्रामाः इति षष्ठीतत्पुरुषसमासः।

**अदर्शि**- दृश्धातोः कर्मणि लुङि प्रथमपुरुषैकवचने रूपम्।

**अवतरन्**- अवपूर्वात् तृधातोः शतरि सौं रूपमिदम्।

**कोष** - समौ संवसथ ग्रामौ इत्यमरः।
दरी तु कन्दरो वा स्त्री देवखातबिले गुहा। गह्वरम् इत्यमरः।

### पाठगतप्रश्न 9.6

33. पर्वत की कन्दराओं में कौन निवास करते थे?

34. महामुनि की कौन पूजा करते थे?

35. महामुनि को क्या मानते थे?

36. गौरसिह व श्यामवटु ने किसको पर्वत की चोटी से उतरते हुए देखा।

## 7.8 मूलपाठ

'अहो! प्रबुद्धो मुनिः! प्रबुद्धो मुनिः! इत एवागच्छति, इत एवागच्छति, सत्कार्योऽयं सत्कार्योऽयम्' इति तौ सम्भ्रन्तौ बभूवतुः।

अथ समापितसन्ध्यावन्दनादिक्रिये समायाते गुरौ, तदाज्ञया नित्यनियमसम्पादनाय प्रयाते गौरवटौ,

टिप्पणी

छात्रगणसहकारेण प्रस्तुतासु च स्वागतसामग्रीषु, 'इत आगम्यताम्, सनाथ्यताभेष आश्रमः' इति सप्रणाममभिगभ्य वदत्सु निखिलेषु, योगिराज आगत्य तन्निर्दिष्टकाहपीठं भास्वानिवोदयगिरिमारुरोह, उपाविशच्च।

तस्मिन् पूज्यमाने, 'योगिराडुत्थित' इति, अयात इति च आकर्ण्य, कर्णपरम्परया बहवो जनाः परितः स्थिताः। सुघटितं शरीरम्, सान्द्रां जटाम्, विशालान्यङ्गानि, अङ्गारप्रतिमे नयने, मधुरां गम्भीराञ्च् वायं वर्णयन्तश्चकिता इव सआताः।

**अन्वयार्थः**- अहो! मुनि जग गये! मुनि जग गये! इधर ही आ रहे हैं, इधर ही आ रहे हैं, ये सत्कार्य हैं, ये सत्कार्य हैं, इस प्रकार (कहते हुए) वे दोनों बटु संभ्रान्त (भाव व्याकुल) हो गये।

इसके बाद सन्ध्यावन्दनादि क्रिया समाप्त करके गुरु के आ जाने पर, उनकी आज्ञा से नित्य नियम सम्पादित करने के लिए गौरबटु के चले जाने पर, छात्रगण की सहायता से स्वागत-सामग्री के प्रस्तुत हो जाने पर तथा प्रणाम पूर्वक सभी लोगों के 'इधर आयेंगे, इस आश्रम को सनाथ कीजिये' इस प्रकार कहने पर (वे पर्वत से उतरने वाले) योगिराज आकर मुनि के द्वारा निर्दिष्ट काष्ठासन पर उदयाचल पर सूर्य के समान, चढ़कर बैठ गये।

उनके (योगिराज के) पूजन के समय ही ''योगिराज (समाधि से) उठ गये हैं और यहाँ आये हुए है'' (यह समाचार) कर्णपरम्परा से (एक दूसरे से) सुनकर चारों ओर बहुत से लोग स्थित (जमा) हो गये। (उनके) सुघटित शरीर, घनी जटा, विशाल अंगों, अंगार के सदृश (तेजस्वी) नेत्र तथा मधुर और गम्भीर वाणी का वर्णन करते हुए (लोग) चकित से हो गये।

**व्याख्या**- मुनि जाग गये हैं अतः उसका सत्कार करना चाहिए यह सोचकर गौरवटु एवं श्यामवटु हर्षान्वित हो गये। उसके बाद सन्ध्यावंदन क्रिया को सम्पादित करके गुरुचरण आ गये। उनकी आज्ञा से गौरवटु नित्यनियम सम्पत्ति के लिए गया। तब छात्र गणों के साथ सभी स्वागत सामग्री सजाकर यहां आइये, इस आश्रम को अलंकृत कीजिये, ऐसा आदर सहित प्रणाम करते हुए बोल रहे थे। उसके बाद मुनिश्रेष्ठ, योगिराज आकर मुनि निर्दिष्ट काष्ठ निर्मित चौकी पर उसी प्रकार बैठ गये जैसे उदयाचल आरुढ़ भगवान भास्कर उदयगिरि पर बैठते हैं।

उस मुनिश्रेष्ठ योगिराज की पूजा के बाद योगिराज उठ गये है, और यहां आये हुए है यह वार्ता परस्पर कानों से सुनकर बहुत अधिक लोग आश्रम में आ गये। उस योगीराज का शरीर सुघटित, घनी जटाएं, विशाल अंग-अंगारे के समान लाल नेत्र तथा मधुर व गम्भीर वाणी थी ये सब सुनकर हुए लोग आश्चर्यचकित हो गये।

### व्याकरणविमर्श -

**समापितसन्ध्यावन्दनादिक्रिये**- सन्ध्याया वन्दनम् इति सन्ध्यावन्दनमिति षष्ठीतत्पुरुषः। सन्ध्यावदनम् आदि यासां ताः सन्ध्यावन्दनादयः इति बहुव्रीहिसमासः। ताश्चामी क्रियाश्चेति सन्ध्यावन्दनादिक्रियाः इति कर्मधारयः। समापिताः सन्ध्यावन्दनादिक्रियाः येन स समापितसन्ध्यावन्दनादिक्रियः, तस्मिन् इति बहुव्रीहिः।

टिप्पणी

**नित्यनियमसम्पादनाय**- नित्याः नियमाः नित्यनियमाः इति कर्मधरयः। तेषां सम्पादनाय नित्यनियमसम्पादनाय इति षष्ठीतत्पुरुषः।

**स्वागतसामग्रीषु**- स्वागतार्थाः साम्रग्यः स्वागतसाम्रग्यः, तासु इति शाकपार्थिवादिवत्समासः।

**आरुरोह**- अङ्पूर्वकाद् रूहधातोः लिटि तिपि आरुरोह इति।

**उपाविशत्**- उपपूर्वपूर्वकाद् विशतेः लङि तिपि उपाविशत् इति।

**कोषः**- भास्वद्विवश्वत्सप्ताहरिदश्वोष्णरश्मयः इत्यमरः।
कर्णशब्दग्रहौ श्रोत्रं स्त्री श्रवणं श्रवः इत्यमरः।

## पाठगत प्रश्न 9.8

37. महामुनि कहां बैठे?

38. महामुनि किसके समान और कहां आरुढ़ हुए?

39. नित्यनियमसम्पादनाय में समास बताइए?

40. महामुनि देखने में कैसे थे?

## पाठसार

सूर्य आकाश में स्थित नक्षत्रों के बीच मणि के समान है। वह पूर्व दिशा मे कुण्डल के रूप मे सुशोभित है। वह कमल के वल्लभ और चक्रवाक मिथुन के शोक का नाशक है। सूर्य के उदय एवं अस्त होने से पद्मिनी की मलिनता एवं प्रकाश नियमित होता है। दिन के स्वामी सूर्य ही समस्त व्यवहारों के प्रवर्तक हैं। सूर्य के उदय होने पर दिन और अस्त होने पर पृथ्वी रात्रि को धारण करती है। सूर्य की गति के कारण ही वर्ष के बारह भेद हैं, ऋतुओं युगो एवं कल्पों के भी भेद होते है। वेदों में भी सूर्य की स्तुति की जाती है। गायत्री मन्त्र से सत्ब्राह्मण प्रतिदिन सूर्य की उपासना करते हैं। उसी कुल में भगवान श्रीरामचन्द्र ने जन्म प्राप्त किया। अत एव विश्व के परम पूजनीय सूर्यदेव की वन्दना करके गौरवटु (गौरसिंह) अपनी कुटीर से बाहर आया। जगने में विलम्ब हो जाने के कारण गुरुसेवा में विघ्न से आशांकित होकर वह गौरवटु गुरु के सन्ध्योपसना के लिए पुष्पचयन करने के लिये उद्यत हुआ अत वह दोना बनाकर पुष्प चयन करने लगा। वह गौरवटु सुन्दर शरीर, 'श्वेतवर्ण, जटाओं से ब्रह्मचारी, सोलहवर्षीय शंख के समान गर्दन वाला, विशाल मस्तक वाला, सुन्दर भुजाओं वाला, विस्तृत नेत्रों वाला था।

उसी समय उसका सहपाठी श्यामबटु आकर बोला कि पुष्पचयन मत करो। वह श्यामवटु चन्दन लिप्त मस्तक वाला, कपूर एवं गुरु चूर्ण लिप्त वक्षःस्थल वाला था उसने गौरवटु से कहा कि यवनों से डरी हुए बालिका की सेवा में गौरवटु के रात्रि के तीन प्रहर बीत गये इसलिए प्रातः शीघ्र नहीं उठ पाया। अब उस बालिका के माता-पिता एवं घर की खोज करनी चाहिए। उसी वार्तालाप के समय में उन दोनों की दृष्टि पर्वत के शिखर पर पड़ी।

उस पर्वत की गुफा में बहुत समय से एक मुनि समाधि में मग्न था उसका परिचय कोई नहीं जानता था। उस मुनि की ग्रामवासी पूजा करते थे। किन्तु वह समाधि में ही लीन रहता था। अब वह मुनि समाधि से उठकर पर्वत से उतर रहा था तब उन दोनों कीं दृष्टि उस पर पड़ी। वह तपोवन की ओर आ रहा था। उसके बाद तपोवन के गुरु, छात्रों के साथ महामुनि को स्वागत वाणी से बुलाकर यथा योग्य अर्चना की। वह योगिराज आश्रम में आकर मुनि निर्दिष्ट चौकी पर उसी प्रकार विराजमान हुए जैसे सूर्य उदय होकर उदयगिरि पर विराजमान होते हैं।

वह मुनि समाधि से उठकर आश्रम में आये है यह बात फैल जाने पर बहुत से लोग आश्रम मे आ गये। उस योगिराज का शरीर सुघटित, जटाएं प्रगाढ, अंग विशाल, नेत्र अंगारे के समान, वाणी मनोहर एवं गम्भीर थी। ऐसी प्रशंसा को सुनकर लोग चकित रह गये। इस प्रकार संक्षेप में पाठ का सार प्रस्तुत है।

## आपने क्या सीखा

- भगवान सूर्य की महिमा को जाना।
- गौरबटु एवं श्यामबटु के स्वरूप एवं उनकी वार्तालाप को जाना।
- योगीराज प्रसंग को जाना।

## पाठान्त प्रश्न

1. 'विष्णोर्माया भगवती'-श्लोक की व्याख्या कीजिए।
2. 'हिंस्रः स्वपापेन' श्लोक की व्याख्या कीजिए।
3. शिवराजविजय काव्य के अनुसार सूर्यादय का वर्णन कीजिए।
4. कदलीदलकुञ्जयितस्य एतत्कुटीरस्य समन्तात् पुष्पवाटिका, पूर्वतः परम-पवित्र-पानीयं परस्सहस्त्र-पुण्डरीक-पटल-परिलसितं पतत्रिकुल-कूजितपूजितं पयःपूरितं सर आसीत्। दक्षिणतृचैको निर्झर-झर्झर-ध्वनित-दिगन्तरः, फल-पटलाऽऽस्वाद-चपलित-चञ्चु-पतङ्ग्कुलाऽऽ-क्रमणाधिक-विनत-शाख-शाखि-समूह-व्याप्तः सुन्दरकन्दरः पर्वतखण्ड आसीत् की व्याख्या कीजिए।
5. तस्मिन् पर्वते आसीदेको महान् कन्दरः। तस्मिन्नेव महामुनिरेकः समाधौ तिष्ठति स्म। कदा स समाधिमङीग्कृतवानिति कोऽपि न वेत्ति। ग्रामणी-ग्रामीण-ग्रामाः समागत्य मध्ये मध्ये तं पूजयन्ति, प्रणमन्ति स्तुवन्ति च। तं केचित् इति, अपरे लोमश इति, इतरे जैगीषव्य इति अन्ये च मार्कण्डेय इति, विश्वसन्ति स्म। स एवायमधुना शिखरादवतरन् ब्रह्मचारिवटुभ्यामदर्शि की व्याख्या कीजिए।
6. योगिराज के वृतान्त का वर्णन कीजिए।

## पाठगत प्रश्नों के उत्तर

टिप्पणी

### 9.1

1. विष्णु की माया भगवती से जगत मोहित है।
2. हिंसक अपने पाप से विनष्ट होते हैं।
3. साधु समत्व भाव से भय से मुक्त होते है।
4. विष्णोर्माया-पद से नमस्कारात्मक मंगलाचरण है।
5. हिंस्र पद से वस्तुनिर्देशात्मक मंगलाचरण है।

### 9.2

6. पूर्व दिशा में भगवान मरीचिमाली का प्रकाश है।
7. सूर्य आकाशमण्डल का मणि है।
8. सूर्य खेचरचक्र (पक्षीयों) का चक्रवर्ती है।
9. ब्रह्माण्ड भाण्ड का दीपक सूर्य है।
10. सूर्य कोकलोक (चक्रवाक वियोग) का शोक विमोचक है।
11. सूर्य वर्ष को बारह भाग में विभक्त करता है।
12. 'उपतिष्ठन्ते' यह उपाद्देवपूजासंगतिकरणमित्रकरणपथिष्विति वक्तव्यम् वार्तिक से आत्मनेपद हुआ।
13. जनपति-यह ''बुधयुधनशजनेंप्रुद्रुस्रुभ्यो णेः से आत्मनेपद हुआ।
14. सूर्य रामचन्द्र के कुल मूल हैं।

### 9.3

15. गौरवटु ने महान पुण्य का समय स्वप्नजाल के अधीन कर व्यतीत किया।
16. गौरवटु के गुरुजनो का प्रातः सन्ध्योपसना का समय है।
17. गुरु के सन्ध्योपसना के लिए गौरवटु पुष्प चुनता है।
18. गौरवटु-मनोरमकाय, धवलवर्ण, जटा ब्रह्मचारी, षोडशवर्षीय शंखग्रीव दीर्घभाल, सुन्दरबाहु विस्तृतलोचन था।

9.4

19. गौरवटु की कुटियाँ कदलीदल से सुशोभित थी।

20. कुटीर के चारों ओर पुष्पवाटिका थी

21. कुटीर के पूर्व में सरोवर था।

22. कुटीर के दक्षिण में सुन्दर कन्दर वाला पर्वतखण्ड था।

23. निर्झरझर्झरध्वनिध्वनितदिगन्तरः- झर्झररूपः ध्वनिः झर्झरध्वनिः शाकपार्थिवादिवत् समासः। निर्झराणां झर्झरध्वनिरिति षष्ठीतत्पुरुषसमासः। तेन ध्वनितानि इति तृतीयातत्पुरुषसमासः। तादृशानि दिगन्तराणि यस्य स इति बहुव्रीहिसमासः

24. परमपवित्रपानीयम्- परमं च तत् पवित्रं चेति कर्मधारयः, तादृशं पानीयं यस्य तत् इति बहुव्रीहिसमासः।

9.5

25. श्यामवटु देखने में श्यामल था उसका भालप्रदेश चन्दनलेपित, वक्षःस्थल कपूर एवं गुरुचर्ण लिप्त था।

26. आचार्य आश्रम के तालाब के किनारे सन्ध्यावन्दन करते थे।

27. श्यामवटु ने सन्ध्योपसना सामग्री स्थापित की।

28. गौरवटु ने यवन त्रास से डरी कन्या को मधुर पेय पिलाकर, मुनियों को भोजन कराकर तथा उस बालिका को सान्त्वना देकर रात्रि के तीन पहर तक जागते रहे।

29. गौरवटु मन्दर के मधुर रस को पिलाकर स्थित थे।

30. वह कन्या यवन त्रास के कारण रो रही थी।

31. दोनों बालिका के माता-पिता और भवन को खोजना चाहते थे।

32. दोनों की दृष्टि पर्वत शिखर पर पड़ी।

9.6

33. पर्वत की गुफा में एक समाधि लीन महामुनि निवास करते थे।

34. ग्रामीण महामुनि की पूजा करते थे।

35. महामुनि को कुछ लोग कपिल, कुछ लोमेश, कुछ जैगीषव्य और कुछ मार्कण्डेय मानते थे।

36. दोनों ने महामुनि को पर्वत से उतरते देखा।

टिप्पणी

9.7

37. महामुनि काष्ठ निर्मित चौकी पर बैठे।

38. महामुनि भास्कर के समान चौकी पर बैठे।

39. नित्यनियमसम्पादनाय- नित्याः नियमाः नित्यनियमाः इति कर्मधारयः। तेषां सम्पादनाय नित्यनियमसम्पादनाय इति षष्ठीतत्पुरुषः।

40. महामुनि सुघटितकाय, प्रगाढजटा, विशाल अंग, अंगारनेत्र एवं मनोहरवाणी वाले थे।